विचार बिन्दु

जब तक भारत का राजकाज अपनी भाषा में नहीं चलेगा तब तक हम यह नहीं कह सकते कि देश में स्वराज है। –मोरारजी देसाई

आज़ादी का अमृत

हम सब बेहद खुशनसीब हैं कि देश की आज़ादी के अमृत महोत्सव के साक्षी बन रहे हैं। मुझ जैसे लोग तो और भी अधिक भाग्यशाली हैं जिन्होंने जन्म तो पराधीन भारत में लिया लेकिन अपने जीवन का बहुलांश स्वाधीन भारत में उसे निर्मित होते, बढ़ते और अनेक चुनौतियों से जूझते हुए देखते हुए जिया। आज ही के दिन, सन 1947 को महान भविष्य दृष्टा पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा को सम्बोधित करते हुए जो कहा था, उसे याद करना बहुत प्रासंगिक लग रहा है। अपने मूल अंग्रेज़ी भाषण में उन्होंने जो कहा था, उसका स्थूल अनुवाद यह है: ***हमने नियति को मिलने का एक वचन दिया था, और अब समय आ गया है कि हम अपने वचन को निभाएं, पूरी तरह ना सही, लेकिन बहुत हद्द तक। आज रात बारह बजे, जब सारी दुनिया सो रही होगी, भारत जीवन और स्वतंत्रता की नयी सुबह के साथ उठेगा। एक ऐसा क्षण जो इतिहास में बहुत ही कम आता है, जब हम पुराने को छोड़ नए की तरफ जाते हैं, जब एक युग का अंत होता है, और जब वर्षों से शोषित एक देश की आत्मा, अपनी बात कह सकती है। ये एक संयोग है कि इस पवित्र मौके पर हम समर्पण के साथ खुद को भारत और उसकी जनता की सेवा, और उससे भी बढ़कर सारी मानवता की सेवा करने के लिए प्रतिज्ञा ले रहे हैं।***

आज़ाद भारत की इन 75 वर्षों की यात्रा बहुत रोमांचक, उत्तेजक, आह्लादक और प्रेरक रही है। लम्बी पराधीनता के बाद स्वाधीन हुए देश के सामने अनगिनत चुनौतियां थीं। यह देश का सौभाग्य है कि इसे अपने स्वाधीन होने के तुरंत बाद जिन नेताओं का नेतृत्व प्राप्त हुआ वे न केवल अपनी देशभक्ति में अतुलनीय थे, उनके पास एक सुलझी हुई दृष्टि और बड़ा सोच भी था। उनके नेतृत्व में देश ने विकास की जो यात्रा प्रारम्भ की, वह अभी भी अनवरत ज़ारी है। इस बीच देश की बागडोर अनेक राजनीतिक दलों और भिन्न-भिन्न सोच वाले नेताओं ने थामी। बेशक उनके दृष्टिकोण अलग-अलग थे, लेकिन इस बात में कोई संशय नहीं है कि वे सभी देश को आगे ले जाना चाहते थे। आज जब देश की स्वाधीनता की पचहत्तरवीं वर्षगांठ पर हम पीछे मुड़कर देखते हैं और यह याद करने का प्रयास करते हैं कि उस समय देश किस अवस्था में था, और फिर स्मृति में निर्मित उस तस्वीर की तुलना आज के भारत से करते हैं तो हमें अपनी विकास यात्रा पर संतोष और गर्व की अनुभूति होती है। यह सच है कि बहुत बार हम उदास भी होते हैं, निराश भी और कभी-कभी नाराज़ भी। लेकिन यह सब हर विकास यात्रा में होता है।

मैं इन पचहत्तर वर्षों की उपलब्धियों को याद करने का प्रयास कर रहा हूं। यह कोई आसान काम नहीं है। हमने बहुत कुछ किया है। फिर भी अगर इन चीज़ों पर एक नज़र डालें तो आप जान पाएंगे कि हमारी यह यात्रा कितनी उपलब्धि पूर्ण रही है। आज़ादी के तुरन्त बाद हमने योजनाबद्ध आर्थिक विकास की राह चुनी और विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा विकास का राजमार्ग निर्मित किया। इसी के साथ-साथ अनेक बड़े संस्थान और संयंत्र बनाए। यह समय की मांग थी। हमारे इस सोच की परिणति यह हुई कि जहां 1947 में हमारे देश में सुई तक नहीं बनती थी, आज न केवल अपनी आवश्यकता की तमाम चीज़ें हम बना रहे हैं, उनका निर्यात भी कर रहे हैं। भाखड़ा नांगल जैसे बड़े बांध और भिलाई राउरकेला जैसे अनेक इस्पात संयंत्र उसी काल की देन हैं। आज़ादी के बाद के कई वर्ष तक हम समाज वादी ढांचे पर काम करते रहे जिसकी वजह से देश के दूरस्थ इलाकों तक आधारभूत सुविधाएं पहुंचाई जा सकीं। सड़कों का निर्माण हुआ, देश के अधिकांश लोगों तक बिजली और पानी पहुंचा। चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार करके अपने नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने की दिशा में खूब काम किया गया। बड़े अभियान चलाकर चेचक और पोलियो का उन्मूलन किया गया और हाल में कोविड जैसी बड़ी महामारी से लड़ने के लिए स्वदेशी टीके कोवैक्सिन का निर्माण किया गया और देश की आबादी के बड़े भाग को टीके द्वारा सुरक्षा प्रदान की गई। स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार की वजह से लोगों की औसत आयु में वृद्धि हुई।

स्वास्थ्य के साथ-साथ हमने शिक्षा के क्षेत्र में भी खूब काम किया। नए स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय खोले गए, आईआईटी और आईआईएम जैसे संस्थान बनाए गए। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों ने गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के मानक स्थापित किए। शिक्षा का अधिकार अधिनियम, मिड डे मील योजना, सर्व शिक्षा अभियान आदि के माध्यम से हमने शिक्षा की सुलभता को नए पंख दिए।

देश के नागरिकों की आर्थिक दशा सुधारने के लिए हमने अनेक काम किए। रोज़गार के अवसर सृजित किए गए, कृषि, व्यवसाय, उद्योग आदि का खूब विस्तार किया और आर्थिक सुधारों वाली ऐसी नीतियां बनाई जिनसे कतार के अंत में खड़ा व्यक्ति भी लाभान्वित हुआ। हरित और श्वेत क्रांति ने इस देश के आम नागरिक को समुचित पोषण प्रदान किया। राजाओं के प्रिवीपर्स समाप्त कर असमानता पर प्रहार किया गया तो रेलों और बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर उन्हें बेहतर सेवा प्रदाता बनाया गया। बंधुआ मज़दूरी पर रोक लगाकर मानवीय गरिमा को पुनर्स्थापित किया गया तो मनरेगा के अंतर्गत ग्रामीणों को सौ दिन के रोज़गार की गारण्टी देकर उनकी जीवन स्थितियों को बेहतर बनाया गया। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम जैसी पहल भी हमने की।

सुरक्षा की दृष्टि से भी हालांकि हमें अपने पड़ोसी देशों की बदनीयती का बार-बार शिकार होना पड़ा है, हमने कारगिल युद्ध में विजय प्राप्त कर और सर्जिकल स्ट्राइक व एयरस्ट्राइक कर दुनिया को दिखा दिया है कि हम किसी से कम नहीं हैं। पोकरण में किया गया आणविक विस्फोट भी हमारी शक्ति का परिचायक था।

यह बात रेखांकित की जाने काबिल है कि नव स्वाधीन देश के पहले प्रधानमंत्री ने कला साहित्य संस्कृति को भी अपनी प्राथमिकता में रखा, इनके विकास के लिए अकादमियों की स्थापना की और इन्होंने तो खूब काम किया ही, भारतीय कलाकारों और विद्वानों ने भी अपने-अपने स्तर पर इस देश का नाम रोशन किया। सत्यजित राय ने ऑस्कर पाकर, अमर्त्य सेन ने नोबल पुरस्कार पाकर और पण्डित रवि शंकर और उस्ताद अली अकबर खान ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जगह दिलाकर, आकाशवाणी और दूरदर्शन ने जन रुचि का परिष्कार करके और बॉलीवुड सहित सभी क्षेत्रीय सिनेमाओं ने बेहतरीन फ़िल्में बनाकर देश का मान बढ़ाया। हाल में गीतांजलि श्री ने बुकर पाकर भी इस देश का गौरव बढ़ाया है। इसी तरह खेलों के क्षेत्र में भी हमने अनेक उपलब्धियां अर्जित की हैं। हॉकी में स्वर्ण पदकों के अलावा शतरंज, एयरराइफल,मुक्केबाजी के साथ-साथ देश के सर्वाधिक लोकप्रिय खेल क्रिकेट में हमने अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। विभिन्न बड़ी खेल स्पर्धाओं जैसे एशियाई खेलों का अपने यहां आयोजन कर हमने खेल सुविधाओं का भी काफी विस्तार किया है। जितना काम कला साहित्य संस्कृति और खेलों के क्षेत्र में हुआ उससे कम विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में नहीं हुआ। परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम, इसरो की स्थापना, परमाणु रिएक्टर अप्सरा का निर्माण, चंद्रयान, पहले भारतीय उपठाह आर्यभट्ट का प्रक्षेपण, पहले उपग्रह रोहिणी का कक्षा में स्थापित होना, स्वदेशी संचार उपठाह का निर्माण, राकेश शर्मा का अंतरिक्ष में जाना, देश के पहली और दुनिया के दूसरे परखनली शिशु का जन्म ऐसी कुछ उपलब्धियां हैं जो तुरंत याद आ रही हैं।

इस बात को कभी नहीं भूला जा सकता है कि भारत ने आज़ाद होते ही अपने सभी नागरिकों को बग़ैर किसी भेद भाव के वयस्क नागरिक मताधिकार प्रदान किया। आज़ादी के तुरंत बाद पांच सौ साठ से ज़्यादा देशी रियासतों को भारत संघ में विलीन करने के बड़े काम के बाद भी हमारी राजनीतिक गतिविधियां एक के बाद एक मंज़िलें तै करती गई हैं। हमारे यहां लोकतंत्र न केवल जीवित है, फल फूल रहा है। समय पर चुनाव होते हैं और जनता अपने प्रतिनिधि चुनती है। वे प्रतिनिधि यथावश्यकता कानून बनाते हैं। पंचायती राज के लिए संवैधानिक संशोधन, बंधुआ मज़दूरी पर प्रतिबंध, सूचना का अधिकार, धारा 377 ऐसे ही कुछ मील के पत्थर हैं जिन पर हम गर्व कर सकते हैं। राजनीतिक रूप से हमने गोआ और पॉण्डिचेरी को भारत में मिलाया तो बांग्लादेश के निर्माण में हम सहयोगी बने। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गुट निरपेक्ष आंदोलन में हमारी भूमिका और पंचशील की हमारी परिकल्पना अविस्मरणीय है।

सुरक्षा की दृष्टि से भी हालांकि हमें अपने पड़ोसी देशों की बदनीयती का बार-बार शिकार होना पड़ा है, हमने कारगिल युद्ध में विजय प्राप्त कर और सर्जिकल स्ट्राइक व एयरस्ट्राइक कर दुनिया को दिखा दिया है कि हम किसी से कम नहीं हैं। पोकरण में किया गया आणविक विस्फोट भी हमारी शक्ति का परिचायक था।

एक छोटे-से आलेख में देश की पचहत्तर वर्षों की उपलब्धियों को समेट पाना आसान नहीं है। मैंने इस बात का प्रयास भी नहीं किया है। बस, कुछ संकेत जुटाए हैं। इनसे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारी यह यात्रा कैसी रही है। फिर भी, इस बात को स्मरण रखा जाना ज़रूरी है कि कोई भी यात्रा सदा सीधे-सपाट मार्ग पर नहीं होती है। बीच-बीच में ऐसी बहुत सारी चीज़ें आती हैं जो उस यात्रा को सरल-सुगम नहीं रहने देती हैं। अब यह यात्रा करने वालों पर निर्भर करता है कि वे इन कठिनाइयों का सामना कैसे करते हैं। शायद इसी बात को ध्यान में रखकर यह कहा गया होगा किसतत जागरूकता ही स्वाधीनता का मोल है।

आज़ादी का दिन हो और गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर की अमर रचना चित्त जेथा भयशून्य याद न आए। महाकवि ने आज़ादी को जिस तरह स्पष्ट किया है, उसे हमें सदा स्मरण रखना चाहिए, और वैसी आज़ादी के लिए सदैव प्रयत्न रत रहना चाहिए। उन्होंने लिखा है: ***जहां चित्त भय से शून्य हो/ जहां हम गर्व से माथा ऊंचा करके चल सकें/ जहां ज्ञान मुक्त हो/..... उसी स्वातंत्र्यस्वर्ग में इस सोते हुए भारत को जगाओ।*** (हिंदी अनुवाद: शिव मंगल सिंह सुमन)

प्रख्यात हिंदी कवि नंद चतुर्वेदी ने अपनी बहु प्रशंसित कविता पराधीनता मुक्ति का दिन में जो लिखा है उसके एक अंश को स्मरण करते हुए मैं स्वयं सहित सब को स्वाधीनता दिवस के इस अमृत पर्व पर हार्दिक मंगल कामनाएं प्रेषित करता हूं। कविता का अंश यह है:–

कितने कठिन दिन हैं स्वाधीनता के/ कभी धुंधले होते हैं शिखर, कभी अनंत रोशनी से चमकते/ कभी मिलते हैं प्रश्नों के उत्तर/ कभी जान दे देनी पड़ती है, प्रश्न पूछने वालों को/ कभी लगता है समय अपरिचित, अनात्मीय, हिंसक, आततायी/ कभी सौम्य, उदार, आत्मीय, मृदुभाषी/ कभी सब लगते हैं ताकतवर धक्का-मुक्की करते/ सभी जगह फ़ैले-पसरे/ कभी सब लगते हैं उदास, कंधों पर फटा कम्बल डाले दीन/ अभी असीम आशा के दौड़ते रथ पर बैठे/स्वाधीनता कहती है/ मुझे परिभाषित करो/ यदि मैं तुम्हारा सपना हूं तो तुम्हारा यथार्थ भी हूं/ तुम्हारा रोज़ खटखटाती हूं दरवाज़ा/ तुम्हारा घर आंगन मेरी संसद है/ यहीं भटकती रहती हूं तुम्हारी यातनाएं लेकर/ मैं तुम्हारी इच्छा-शक्ति हूं/ तुम्हारी विजय की अकुण्ठित कामना।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

हमारे प्रथम स्वतंत्रता दिवस की कुछ भूली-बिसरी यादें

हमारे देश के स्वाधीनता आंदोलन का नेतृत्व राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया था। उनके साथ समूचा देश था उनके अगिनत अनुयायियों में सरदार पटेल, नेहरू, राजेंद्र प्रसाद, मोलाना आजाद आदि प्रमुख थे। बापू ने आजाद भारत की बागडोर नेहरू जी को सौंपने का तय किया और सरदार पटेल आदि को उनका नेतृत्व मानने को कहा। जब तय हो गया कि भारत 15 अगस्त 1947 को आज़ाद होगा तो जवाहर लाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल ने महात्मा गांधी को पत्र भेजा। इस ख़त में लिखा था, बापू 15 अगस्त हमारा पहला स्वाधीनता दिवस होगा। आप राष्ट्रपिता है । आपसे प्रार्थना है कि आप इसमें शामिल हो कर हम सबको अपना आशीर्वाद दें एवं हमारा मार्गदर्शन करें। गांधीजी ने इस पत्र का जवाब भिजवाया, जब कलकत्ता में हिन्दू-मुस्लिम एक-दूसरे की जान ले रहे हैं, ऐसे में मैं जश्न मनाने के लिए कैसे सोच सकता हूँ और कैसे आ सकता हूं? मैं दंगा रोकने के लिए अपनी जान दे दूंगा। हम सब को यह जान कर हमें हैरानी नहीं होनी चाहिए कि जब देश को 15 अगस्त,1947 को आजादी मिली तो बापूजी खुद आजादी के जश्न में शामिल नहीं हुए थे क्योंकि बापूजी आज़ादी के दिन दिल्ली से हजारों किलोमीटर दूर बंगाल में गये हुये थे, जहां वे हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए आमरण अनशन कर रहे थे।

जवाहर लाल नेहरू ने ऐतिहासिक भाषण 'ट्रिस्ट विद डेस्टनी' 14 अगस्त की मध्यरात्रि को वायसराय लॉज (मौजूदा राष्ट्रपति भवन) से दिया था। तब नेहरू प्रधानमंत्री नहीं बने थे। इस भाषण को पूरी दुनिया ने सुना। यह एतिहासिक भाषण हमारे मस्तिष्क पर तत्कालीन भारत की दशा और स्वतंत्रता सेनानियों के स्वप्नों का मानचित्र प्रस्तुत करता है इस भाषण को पूरी दुनिया ने सुना, लेकिन गांधी उस दिन नौ बजे ही सोने चले गए थे।

15 अगस्त 1947 को जवाहर लाल नेहरू का भाषण :- जवाहर लाल नेहरू ने अपने भाषण में कहा कि कई साल पहले हमने भाग्य को बदलने का प्रयास किया था। आज वो समय आ गया है जब हम गुलामी से मुक्त हो जाएंगे। पूरी तरह नहीं लेकिन यह महत्वपूर्ण है। जब आधी रात 12 बजे पूरी दुनिया सो रही होगी। इस दौरान भारत स्वतंत्र जीवन के साथ नई शुरुआत करेगा। नेहरू के इस भाषण ने हर भारतीय के अंदर नए भारत के सपने की ललक जगाने का काम किया। नेहरू ने अपने भाषण में कहा- ये ऐसा समय है जो इतिहास में बेहद कम देखने को मिलता है। पुराने से नए की ओर जाना, एक युग का अंत होना। अब सालों से शोषित देश की आत्मा अपनी बात कह सकती है। उन्होंने कहा कि यह संयोग है कि हम पूरे समर्पण के साथ भारत और उसकी जनता की

डॉ. जे.के. गर्ग

सेवा के लिए प्रतिज्ञा ले रहे हैं। इतिहास की शुरुआत के साथ ही भारत ने अपनी खोज शुरू की और न जाने कितनी सदियां इसकी भव्य सफलताओं और असफलताओं से भरी हुई हैं।

दूसरे युग की भारत खुद को खोज रहा है... :- नेहरू ने कहा कि समय अच्छा हो या बुरा, भारत ने कभी अपने आदर्शों को नहीं भुलाया, जिसने हमेशा हमें आगे बढ़ने की शक्ति दी। आज एक युग का अंत हो रहा है लेकिन दूसरे युग की तरफ भारत खुद को खोज रहा है। जिस उपलब्धि की हम खुशियां मना रहे हैं। वो नए अवसरों के खुलने के लिए केवल एक कदम है। इससे भी बड़ी जीत और उपलब्धियां हमारा इंतजार कर रही हैं।

किसी भी आंख में न रहे आंसू... :- जवाहर लाल नेहरू ने भारतीयों को संबोधित करते हुए आगे कहा कि भविष्य में चैन से नहीं बैठना है। हम जो बात कह रहे हैं या कर रहे हैं उसे पूरा किए बगैर आराम नहीं करना है। भारत की सेवा का मतलब है करोड़ों पीड़ितों की सेवा करना यानी गरीबी को मिटाना, बीमारियों और अवसर की असमानता को खत्म करना। हमारी पीढ़ी के सबसे महान व्यक्ति की यही इच्छा है कि किसी भी आंख में आंसू न रहें। नेहरू ने आगे कहा कि लोगों की आंखों में जब तक आंसू हैं वो पीड़ित हैं। तब तक हमारा काम खत्म नहीं होगा। इसके लिए हमें मेहनत करने की जरूरत है। ये सपने भारत के लिए हैं साथ पूरे विश्व के लिए भी हैं। कोई भी देश अब खुद को अलग नहीं सोच सकता है क्योंकि सभी राष्ट्र और सभी लोग एक-दूसरे से बड़ी निकटता से जुड़े हुए हैं। शांति को विभाजित नहीं किया जा सकता है। ऐसे ही स्वतंत्रता को भी विभाजित नहीं किया जा सकता है। हमें ऐसे भारत का निर्माण करना है जहां उसके सारे बच्चे रह सकें।

एक नए तारा का उदय हुआ, काश यह उम्मीद धूमिल न हो... :- नेहरू ने अपने संबोधन में कहा कि अब सही समय आ चुका है जब सालों के संघर्ष के बाद अब भारत जागृत है और खड़ा है। हमारे लिए नया इतिहास शुरू हो चुका है। एक ऐसा इतिहास जिसका निर्माण हम करेंगे। जिसे हम बनाएंगे और जिसके बारे में अन्य लोग देखेंगे। एक नए तारे का जन्म हुआ है और यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। एक नई उम्मीद का जन्म हुआ है, काश ये तारा कभी अस्त

- **बापू खुद आजादी के जश्न में शामिल नहीं हुए**
- **वे बंगाल में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए आमरण अनशन कर रहे थे**

न हो और ये उम्मीद कभी धूमिल न हो।

15 अगस्त, 1947 को लॉर्ड माउंटबेटन ने अपने दफ़्तर में काम किया। दोपहर में नेहरू ने उन्हें अपने मंत्रिमंडल की सूची सौंपी जिनमें सरदार पटेल, आर ऐ चेट्टी बाबा साहिब, अम्बेडकर, बलदेवसिंह, गोपालस्वामी, आयेंगर, मोलाना आज़ाद, राजेंद्र प्रसाद, श्यामा प्रसाद मुख़र्जी ,जजीवंराम, एच सी भाभा, रफी अहमद किदवई , डा अमृत कौर, वी गाडगील, केसी नियोगी शामिल थे। इसके बाद नेहरु में इंडिया गेट के पास प्रिंसेस गार्डन में एक सभा को संबोधित किया।

डॉ. जे.के.गर्ग
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

खुद जलदाय विभाग ग्रामीण के कार्यालय में ढ़ाई माह से नहीं आया पानी!

चूरू, (कासं)। चूरू जिला मुख्यालय की भालेरी रोड पर स्थित खुद जलदाय विभाग ग्रामीण के कार्यालय में ढ़ाई माह से पानी नहीं आ रहा है। हालात यह हैं कि जलदाय विभाग ग्रामीण के कार्यालय में स्थित हनुमानजी के मंदिर और गोगाजी महाराज के मंदिर में पूजा करने के लिए भी पानी नहीं मिल रहा है। जानकारी के अनुसार रीको की एक नम्बर रोड़ पर स्थित जलदाय विभाग ग्रामीण के कार्यालय में लगभग ढाई माह पहले पानी की सप्लाई बंद हो गई थी। उसके बाद आज तक यहां किसी भी संबंधित अधिकारी और कर्मचारी ने इसकी कोई सुध नहीं ली है। यहां पाइप लाइन में कोई 'डाट' आ गई बताई। उसे सही करने का समय किसी भी अधिकारी व कर्मचारी के पास नहीं है। जलदाय विभाग ग्रामीण के कार्यालय में मौजूद संबंधित अधिकारी और कर्मचारी सब कुछ जानकर भी अनजान बने हुए हैं।

जलदाय विभाग ग्रामीण का कार्यालय पानी के बिना सूखा पड़ा है।

इतना ही नहीं इस कार्यालय के मुख्य द्वार सहित कहीं भी इसके नाम का बोर्ड आदि नहीं लगा हुआ है। अधिकारी कहते हैं कि जलदाय विभाग को सब जानते हैं, इसलिए कार्यालय भवन पर जलदाय विभाग का नाम लिखने की ज़रूरत ही नहीं है। लापरवाह अधिकारियों के खिलाफ उचित कार्यवाही नहीं होने से ही ये लापरवाही की हदें पार कर रहे हैं।

लोगों का कहना है कि इन लापरवाह अधिकारियों की पहुंच ऊपर तक है। तभी तो कलैक्टर भी इनकी हर लापरवाही को अनदेखा कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें भी तो शांति से नौकरी करनी है। वे क्यों कोई झोड़ पालें।

कलेक्टर डॉ. सोनी को 'नागरिक सुरक्षा, सेवा पदक'

अलवर, (निसं)। जिला कलेक्टर एवं नागरिक सुरक्षा नियंत्रक डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी को आपदा प्रबंधन एवं नागरिक सुरक्षा कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान के लिए 15 अगस्त के अवसर पर 'राष्ट्रपति महोदय के नागरिक सुरक्षा सराहनीय सेवा पदक' दिये जाने की घोषणा की गई है। उल्लेखनीय है कि जिला कलेक्टर एवं नागरिक सुरक्षा नियंत्रक अलवर डॉ. सोनी द्वारा झालावाड, जालोर व नागौर जिला कलेक्टर रहते हुए विभिन्न आपदा प्रबंधन एवं नागरिक सुरक्षा कार्यों में उत्कृष्ट कार्य किये हैं।

इन्हें जालोर जिला कलक्टर रहते हुए अपनी जान की परवाह किये बिना बाढ में फंसे 8 लोगों को जीवित निकालने पर पूर्व में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रपति महोदय का 'उत्तम जीवन रक्षक पदक' से नवाजा जा चुका हैं। इसके साथ ही डॉ. सोनी को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा महाविद्यालय नागपुर में वर्ष 2016 में सर्वश्रेष्ठ नियंत्रक नागरिक सुरक्षा का

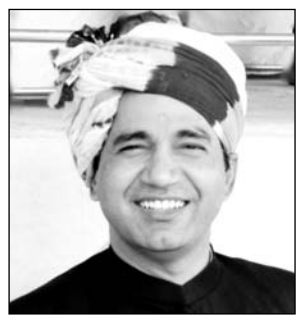

कलेक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी।

- **कलेक्टर ने नागरिक सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में कई प्रशिक्षण कोर्सेज भी किये है**

अवार्ड भी प्रदान किया जा चुका है। इन्होंने नागरिक सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर विभिन्न प्रशिक्षण कोर्सेज भी किये हैं।

सेना का तिरंगे के साथ 75 किलोमीटर साइक्लोथोन का आयोजन

अजमेर, (कासं)। नसीराबाद के अग्रिबाज गनर्स ने स्वतंत्रता के पिचहत्तर वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में रविवार को एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया। पिचहत्तर नाम के इस कार्यक्रम में 20 प्रतिभागियों ने साईक्लोथोन में तिरंगे के साथ कुल 75 किलोमीटर की दूरी पूरी की। साईक्लोथोन का आरम्भ नसीराबाद से सुबह 6 बजे हुआ।

साईक्लोथोन का मार्ग अजमेर ग्रामीण शहर के विभिन्न इलाकों, राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल अजमेर से होकर नसीराबाद सैन्य स्टेशन के स्टेडियम में सुबह 10 बजे समाप्त हुआ। राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल अजमेर के कैडेटों ने भी साईक्लोथोन लैप में भाग लिया। प्रतिभागियों का स्थानीय लोगों और स्कूली छात्रों द्वारा उत्साहवर्धन किया गया। कार्यक्रम के समापन पर संबोधन के लिए ब्रिगेडियर ए मुखर्जी स्टेशन कमांडर नसीराबाद ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य देशभक्ति और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना है।

साईक्लोथोन के अलावा नसीराबाद में सैन्य उपकरणों की प्रदर्शनी, देशभक्ति गीत लेखन और रंगोली प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया है। इससे पहले शनिवार को स्टेशन कमांडर ने जिले के उन सैन्य कार्मियों के परिजनों से भी बातचीत की जिन्होंने देश की सेवा के दौरान अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था। इस अवसर पर परिजनों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए।

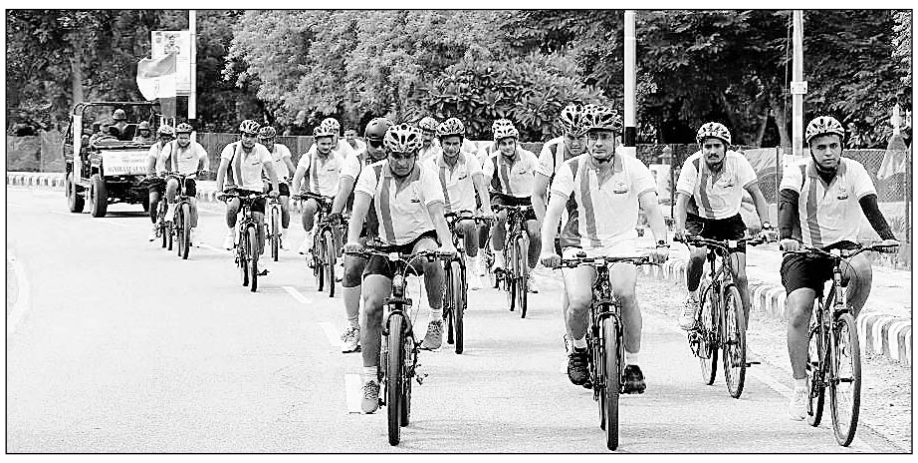

20 प्रतिभागियों ने साइक्लोथोन में तिरंगे के साथ भाग लिया।

राशिफल सोमवार 15 अगस्त, 2022

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, चतुर्थी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र रात्रि 9:07 तक, धृति योग रात्रि 11:23 तक, बव करण प्रात: 9:49 तक, चन्द्रमा मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज संकट चतुर्थी व्रत है। चन्द्रोदय रात्रि 9:35 पर होगा। आज बहुला चौथ, पंचक है और श्रवण तपस्या पूर्ण (जैन)। आज भारतीय स्वतंत्रता दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:39 तक, शुभ 9:17 से 10:54 तक, चर 2:09 से 3:46 तक, लाभ-अमृत 3:46 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:02, सूर्यास्त 7:01

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मिथुन
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कर्क
धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं और धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कन्या
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है।

तुला
महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
आवश्यक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में प्रसन्नता का माहौल रहेगा।

धनु
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ने का भय बना रहेगा।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है और मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव दूर होगा। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।